

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 30, रेव. 12-13

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

पिछले सत्र में मैं जो करना चाहता हूँ वह एक और नए नियम के पाठ को एक उदाहरण के रूप में देखना है कि विभिन्न व्याख्यात्मक तरीकों का उपयोग और कार्यान्वयन कैसे किया जाए जिनके बारे में हमने इस पाठ्यक्रम में बात की है। और एक बार फिर, मैं आवश्यक रूप से स्पष्ट रूप से विधि का उल्लेख नहीं करूंगा और कहूंगा, अब मैं यह कर रहा हूँ, लेकिन उम्मीद है, आप यह पहचानने में सक्षम होंगे कि पाठ के माध्यम से काम करते समय किस विधि का उपयोग किया जाता है और मैं इसका उपयोग कैसे करता हूँ। और जिस पाठ पर मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ वह प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 और 13 है।

और मैं केवल अध्याय 12 को पढ़कर शुरुआत करना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य जैसा पाठ पढ़ना महत्वपूर्ण है। वास्तव में, पुस्तक पढ़ने वालों और सुनने वालों को आशीर्वाद देने से शुरू होती है।

इसलिए रहस्योद्घाटन का उद्देश्य सबसे पहले सुनना था, और हमारी आँखों के सामने घूमती छवियों को सुनने और उस नाटक को सुनने के बारे में कुछ है जो चल रहा है। इसलिए मैं केवल अध्याय 12 पढ़ूंगा और फिर अध्याय 13 का सारांश प्रस्तुत करूंगा। इसलिए प्रकाशितवाक्य अध्याय 12।

और फिर यह कहा जाता है, और स्वर्ग में युद्ध हुआ। माइकल और उसके स्वर्गदूतों ने अजगर के खिलाफ लड़ाई लड़ी, और अजगर और उसके स्वर्गदूतों ने जवाबी लड़ाई की। लेकिन अजगर उतना मजबूत नहीं था, और उन्होंने स्वर्ग में अपना स्थान खो दिया।

बड़े अजगर को नीचे फेंक दिया गया, प्राचीन साँप को शैतान या शैतान कहा गया, जो पूरी दुनिया को भटकाता है। उसे और उसके स्वर्गदूतों को पृथ्वी पर फेंक दिया गया। तब मैं ने स्वर्ग में से एक

ऊंचे शब्द को यह कहते हुए सुना, अब उद्धार, और सामर्थ, और परमेश्वर का राज्य, और उसके मसीह का अधिकार आ गया है।

क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो दिन रात परमेश्वर के साम्हने उन पर दोष लगाता रहता है, नीचे गिरा दिया गया है। उन्होंने मेमे के लहू के द्वारा, और अपनी गवाही के वचन के द्वारा उस पर जय पाई। उन्हें अपने जीवन से इतना प्रेम नहीं था जितना मृत्यु से कतराते।

इसलिये हे स्वर्गो, और उन में रहनेवालो आनन्द करो। परन्तु पृथ्वी और समुद्र पर हाय, क्योंकि शैतान तुम्हारे पास उतर आया है। वह क्रोध से भर गया है, क्योंकि वह जानता है कि उसका समय कम है।

जब अजगर ने देखा कि उसे धरती पर गिरा दिया गया है, तो उसने उस महिला का पीछा किया जिसने बेटे को जन्म दिया था। स्त्री को एक बड़े उकाब के दो पंख दिए गए, ताकि वह रेगिस्तान में उसके लिए तैयार किए गए स्थान पर उड़ सके, जहां एक समय, कई बार, और आधे समय, या साढ़े तीन समय तक उसकी देखभाल की जाएगी। वर्षों, कुछ अनुवाद कहते हैं, साँप की पहुँच से बाहर। तब सर्प ने स्त्री को पकड़ने और उसे तेज धारा में बहा देने के लिये अपने मुख से नदी की नाई जल निकाला।

परन्तु पृथ्वी ने अपना मुँह खोलकर उस स्त्री की सहायता की, और उस नदी को निगल लिया जो अजगर ने अपने मुँह से निकाली थी। तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी बाकी संतानों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए चला गया, जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु की गवाही पर कायम रहते हैं। और फिर, पद एक क्या है, और अजगर समुद्र के तट पर खड़ा हो गया।

और अध्याय 13 में क्या होता है, आप भी पाते हैं, जब शैतान समुद्र के किनारे खड़ा होता है, तो वह दो सहायकों को बुलाने के लिए ऐसा करता प्रतीत होता है। जिसे हम अध्याय 13 में दो अन्य

जानवरों के रूप में पाते हैं। एक पशु जो समुद्र से निकलता है, और एक पशु जो पृथ्वी से निकलता है।

और इन दो जानवरों को शैतान ने महिला की संतानों का पीछा करने, और उनके साथ युद्ध करने, और उन्हें नष्ट करने का प्रयास करने में मदद करने के लिए बुलाया है। अब इससे पहले कि हम इस पाठ को समझें, इसे इसके ऐतिहासिक संदर्भ में रखना महत्वपूर्ण है। और विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का ऐतिहासिक संदर्भ।

प्रकाशितवाक्य स्पष्ट रूप से सात चर्चों को संबोधित है जो एशिया माइनर के प्राचीन क्षेत्र, या आधुनिक पश्चिमी तुर्की में स्थित हैं। जो, वे सात चर्च ग्रीको-रोमन साम्राज्य के भीतर, रोमन शासन के भीतर विराजमान हैं। और सात शहरों की विशेषताओं में से एक, यह दिलचस्प है, सभी सात शहरों में से अधिकांश में या तो शाही मंदिर थे।

अर्थात् वे मंदिर जो सम्राट के सम्मान में बनवाये गये थे। या, और या उनके पास बुतपरस्त देवताओं को समर्पित मंदिर थे। और यह अपेक्षा की गई थी कि ईसाई या नागरिक, जो स्वयं को रोमन साम्राज्य की सीमा के भीतर पाते थे।

यह अपेक्षा की गई थी कि वे बुतपरस्त देवताओं के लिए, बल्कि स्वयं सम्राट के लिए भी पूजा करेंगे और पूजा की गतिविधियों में भाग लेंगे। आखिरकार, रोम को उत्पादन करने वाली चीज़ के रूप में देखा जाता था, या आमतौर पर रोम को सकारात्मक दृष्टि से देखा जाता था। अर्थात्, रोम उन सभी को शांति प्रदान करने और उत्पादन करने के लिए जिम्मेदार था जो उसके साम्राज्य के भीतर और उसकी सीमाओं के भीतर थे।

लोगों ने जिस शांति और आर्थिक समृद्धि का आनंद लिया, उसके कारण हर कोई रोम और सम्राट के प्रति कृतज्ञता का ऋणी है। यह सब रोम, रोमन शासन और रोमन सम्राट का परिणाम था। हम पहले ही देख चुके हैं कि संरक्षक-ग्राहक संबंध, वह संरक्षक-ग्राहक गतिशीलता संभवतः रोम के विषयों के संबंध में रोमन सम्राट के साथ संचालित होती थी।

यानी, फिर से, चूंकि रोम और सम्राट को लोगों की भलाई के लिए, उसके द्वारा प्रदान की गई शांति और आर्थिक समृद्धि के संदर्भ में जिम्मेदार माना जाता था। तब लोगों पर रोम और सम्राट के प्रति कृतज्ञता का ऋण बकाया था, और उसे अपने संरक्षक के प्रति ग्राहक की उचित अभिव्यक्ति के रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता थी। हालाँकि, हमने यह भी देखा है कि रोम का राजनीतिक और आर्थिक जीवन धार्मिक जीवन के साथ, अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ रहा होगा।

फिर, रोम को अक्सर देवी रोमा से जोड़ा जाता था, और हम पहले ही कह चुके हैं कि इन सभी शहरों में सम्राट के सम्मान में मंदिर बनाए गए होंगे, शाही पंथ की दृष्टि में, सम्राट की पूजा करने की एक प्रणाली, ऋण दिखाना सम्राट के प्रति कृतज्ञता, न केवल सम्राट के प्रति बल्कि अन्य रोमन देवताओं के प्रति भी अपनी निष्ठा प्रदर्शित करना। वास्तव में, अधिकांश व्यवसाय या व्यवसाय के अवसर, चाहे वह कपड़ा व्यवसाय हो, या चाहे वह वाणिज्यिक व्यवसाय हो, या यहां तक कि एक व्यापार, शिपिंग व्यापार के साथ काम करना, उनमें से लगभग सभी सम्राट की पूजा के अवसरों के साथ लिपटे हुए होंगे। या बुतपरस्त देवता. और इसलिए कोई भी बुतपरस्त पूजा या सम्राट की पूजा में भाग लेने के इन सभी अवसरों का सामना करना शुरू कर सकता है, ईसाइयों के लिए, सवाल उठता है, मैं रोम और रोमन समाज के जीवन और संस्कृति में किस हद तक भाग ले सकता हूं, जिसमें इसकी धार्मिक प्रथाओं और इसकी मूर्तिपूजा प्रथाओं में भाग लेना शामिल होगा, कोई किस हद तक ऐसा कर सकता है, और फिर भी यीशु मसीह के प्रति अपनी निष्ठा और वफादारी बनाए रख सकता है? कुछ ईसाइयों ने रोम के जीवन में, विशेष रूप से शाही पंथ में, और सम्राट और अन्य बुतपरस्त देवताओं की पूजा करने के अवसरों में भाग लेने से इनकार कर दिया, और ऐसा करने से इनकार कर दिया क्योंकि यह भगवान और यीशु मसीह की विशेष पूजा के साथ असंगत था, और इसलिए परिणाम भुगतना होगा, शायद नौकरी की हानि, या अन्य प्रकार के उत्पीड़न के माध्यम से।

रहस्योद्घाटन की पुस्तक के अनुसार, एक व्यक्ति पहले ही मर चुका है, हालांकि ऐसा नहीं लगता है कि अभी तक साम्राज्य-व्यापी या आधिकारिक तौर पर स्वीकृत उत्पीड़न जैसा कुछ

हुआ है। अधिकांश उत्पीड़न, विशेषकर वे जिनके परिणामस्वरूप मृत्यु हुई, स्थानीय स्तर पर अधिक रहे होंगे, और अधिक छिटपुट रहे होंगे। यह स्थानीय संभ्रांत लोग रहे होंगे जो ईसाइयों पर सहमत होने के लिए दबाव डाल रहे थे।

आखिरकार, वे नहीं चाहते कि उनका शहर रोम के प्रति कृतघ्न या विद्रोही दिखाई दे, क्योंकि उन्होंने भाग लेने से इनकार कर दिया और सम्राट के प्रति निष्ठा दिखाने या सम्राट या यहां तक कि अन्य मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा करने के विभिन्न अवसरों में भाग लेकर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। इसलिए अनुरूप होने का अधिकांश दबाव स्थानीय स्तर पर आया। इस स्थिति पर दूसरी प्रतिक्रिया समझौता होगी।

कई ईसाइयों ने शायद इस बारे में दोबारा नहीं सोचा कि वे क्या कर रहे हैं। वे रोमन अर्थव्यवस्था में भाग लेने और आजीविका कमाने और अमीर बनने के लिए काफी इच्छुक थे, लेकिन ऐसा करने के लिए वे सम्राट पूजा की पूरी धार्मिक प्रणाली और यहां तक कि अन्य मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा में भी भाग लेने के इच्छुक थे। तो यही वह स्थिति है जिसे जॉन उन ईसाइयों को संबोधित करते हुए प्रतीत होते हैं जो इस वास्तविकता से संघर्ष कर रहे हैं।

सबसे अधिक संभावना है कि रहस्योद्घाटन लिखा गया था, हालांकि कई प्रस्तावित तिथियां हैं, सबसे लोकप्रिय एक यह है कि रहस्योद्घाटन पहली शताब्दी के अंत में लिखा गया था, वास्तव में पहली शताब्दी के आखिरी दशक के मध्य में, के शासन के तहत डोमिनियन नाम का सम्राट। रहस्योद्घाटन की शैली, रोमन 6 पाठ के विपरीत, जिस पर हमने अभी विचार किया, रहस्योद्घाटन की शैली जिसके बारे में हमने शैली आलोचना के तहत बात करने में कुछ समय बिताया, लेकिन रहस्योद्घाटन में तीन गुना शैली का एक अनूठा मिश्रण शामिल है। सबसे पहले, यह सर्वनाश की शैली से संबंधित है, या कम से कम यही वह लेबल है जिसे हमने इस साहित्यिक प्रकार को दिया है।

यह एक प्रकार का साहित्य है जो एक द्रष्टा के दूरदर्शी अनुभव को दर्ज करता है जो स्वर्गीय दुनिया और भविष्य की दृष्टि देखता है और उस दृष्टि को अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में प्रस्तुत

करता है। इसका उद्देश्य पाठक को अपनी वास्तविकता को एक नई रोशनी में देखने में मदद करना है। इसलिए सर्वनाश की साहित्यिक शैली में लिखकर, जॉन अपने पाठकों को उनकी स्थिति को एक नई रोशनी में देखने की कोशिश कर रहे हैं।

उन्हें प्राप्त करने के लिए, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो समझौता कर रहे हैं, उन्हें जगाने और देखने के लिए कि वास्तव में क्या दांव पर लगा है। उनकी स्थिति पर एक अलग दृष्टिकोण देखने के लिए, एक उत्कृष्ट या स्वर्गीय परिप्रेक्ष्य जो जॉन के सामने प्रकट हुआ है और अब वह अपने चर्चों को लिखित रूप में भेजता है। हमने देखा है कि यह एक भविष्यवाणी भी है, जिसमें यह मुख्य रूप से एक उद्घोषणा है, एक संदेश है जो सांत्वना के संदर्भ में संबोधित करता है, लेकिन उपदेश और चेतावनी भी देता है, भगवान के लोगों को संबोधित करता है।

यह एक पत्र भी है, जिसमें लेखक एक संदेश संप्रेषित करता है जो उसके पाठकों के लिए प्रासंगिक है। यह एक विशिष्ट स्थिति और अवसर से मिलता है, इसलिए यह कुछ ऐसा होना चाहिए जिसे समझा जा सके। इसलिए जब हम प्रकाशितवाक्य 12 और 13 पढ़ते हैं, तो इसकी छवियों या प्रतीकों या संपूर्ण पाठ की कोई भी व्याख्या, जिसे जॉन ने कभी नहीं सोचा होगा और उसके पाठक कभी भी इसे समझ नहीं सकते थे, संभवतः अस्वीकार कर दिया जाएगा।

तो उस पृष्ठभूमि के प्रकाश में, आइए प्रकाशितवाक्य के अध्याय 12 और 13 पर अधिक विशेष रूप से नज़र डालें। उम्मीद है कि मैं फिसलकर ऐसा बार-बार नहीं कहूंगा। प्रकाशितवाक्य 12 और 13 अध्याय 11 के एक खंड का अनुसरण करता है जो दो गवाहों का वर्णन या चर्चा करता है।

दो गवाहों की चर्चा तुरही के संदर्भ में चर्च की भूमिका को चित्रित करती है। अध्याय 8 और 9 में तुरही की विपत्तियों को याद करें, जो निर्गमन पर आधारित हैं। इन सात तुरहियों को चित्रित करने के बाद, अब अध्याय 11 में जॉन इस प्रश्न को संबोधित करता है कि इस सब में चर्च की क्या भूमिका है।

वह दो गवाहों के संदर्भ में चित्रित करता है कि चर्च को पीड़ा के बावजूद भी एक वफादार गवाह बनना है। विरोध और पीड़ा के बीच भी। दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 11 में जॉन एक जानवर का वर्णन करता है जो रसातल से बाहर आता है और इन दो गवाहों के साथ युद्ध करता है।

असल में उन्हें हरा देता है। इसलिए मुझे लगता है कि अध्याय 12 और 13, अध्याय 11 से भी अधिक विस्तार में जाकर पूछते हैं कि स्रोत क्या है, चर्च के संघर्ष का सच्चा स्रोत क्या है। यह दो गवाहों या चर्च और जानवर के बीच इस संघर्ष के बारे में अधिक विस्तार से बताता है।

अब हम अध्याय 12 से 13 में देखने जा रहे हैं, लेखक जानवर और भगवान के लोगों, चर्च के बीच इस संघर्ष को और भी अधिक विस्तार से संबोधित करता है। जैसा कि हम अध्याय 12 और 13 को देखते हैं, तो हमें यह भी पूछना होगा कि कुछ प्रतीकों का अर्थ क्या है। अध्याय 12 से 13 में किन घटनाओं का उल्लेख किया जा सकता है? वे कब घटित होते हैं? क्या यह उन चीज़ों का वर्णन कर रहा है जो पहली शताब्दी में घटित हुईं? या क्या यह उन घटनाओं का वर्णन कर रहा है जो ईसा मसीह के दूसरे आगमन पर, दुनिया के अंत में घटित हुईं? इसलिए हमें उन प्रश्नों से निपटने की आवश्यकता होगी जो मुझे लगता है कि एक सर्वनाश के रूप में, एक भविष्यवाणी के रूप में भी रहस्योद्घाटन के लिए अद्वितीय हैं।

अध्याय 12 से 13 तक एक साथ विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि वे एक इकाई बनाते हैं। मुख्य रूप से इन तीन जानवरों और महिला और उसकी संतानों के इर्द-गिर्द घूमती है। लेकिन हमें तीन जानवर या जानवर या ड्रैगन सर्पेंटाइन प्रकार की आकृतियाँ मिलती हैं।

हम अध्याय 12 में एक ड्रैगन को केंद्रीय भूमिका निभाते हुए पाते हैं। लेकिन फिर हम अध्याय 13 में दो अन्य जानवरों की आकृतियाँ देखते हैं जिन्हें वास्तव में हम ड्रैगन के समान शब्दों में वर्णित देखेंगे। और हम पहले ही देख चुके हैं कि ड्रैगन समुद्र के किनारे खड़ा हो जाता है जैसे कि वह और अधिक मदद की तलाश में हो या उसे बुलाने के लिए तैयार हो।

और वह ऐसा दो जानवरों की आकृतियों को बुलाकर करता है जो उसके समान हैं और अध्याय 12 के ड्रैगन के समान ही वर्णित हैं। इसलिए अध्याय 12 और 13 एक इकाई बनाते हैं। और फिर ये तीन पशु आकृतियाँ संभवतः वही बनाती हैं जिसे कुछ व्याख्याकारों ने अपवित्र त्रिमूर्ति कहा है।

यह रहस्योद्घाटन की पूरी किताब के संदर्भों के विपरीत है। परमपिता परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, संप्रभु, और मेमे, यीशु मसीह मेमे के बीच। और फिर अंततः आत्मा, पवित्र आत्मा जिसका विभिन्न तरीकों से वर्णन किया गया है जैसे कि परमेश्वर की सात आत्माएँ।

अब उसकी नकल के रूप में हमें एक अपवित्र त्रिमूर्ति मिलती है जो ड्रैगन है। और फिर यह जानवर नंबर एक है जिसे अक्सर एंटीक्रिस्ट के रूप में जाना जाता है। वह जो उसके विपरीत है जो विरोधी है, मसीह का व्यक्तित्व।

और फिर अंततः जानवर संख्या तीन जो संभवतः पवित्र आत्मा के अनुरूप होगा। और यदि कोई सटीक पत्राचार है तो थोड़ा सा ओवरलैप हो सकता है। यहां तीन पशु आकृतियों और ईश्वर, उनके पुत्र यीशु मसीह और आत्मा की त्रिमूर्ति के बीच एक स्पष्ट हास्यानुकृति प्रतीत होती है।

जिसका उल्लेख प्रकाशितवाक्य के अध्याय 1 में पहले से ही किया गया है। इसलिए इसे सीमित करने के लिए अध्याय 12 और 13 को अधिक विस्तार से देखें। अध्याय 12 से शुरू करते हुए हम जो करना चाहते हैं वह प्रतीकों को नंबर एक के प्रति सचेत करना है।

और शायद उनकी पृष्ठभूमि और उनके अर्थ और वे क्या संदर्भित करते हैं। लेकिन फिर यह भी कि कथा कैसे विकसित होती है। और फिर हमने कहा कि सर्वनाश की शैली का हिस्सा एक दूरदर्शी अनुभव का एक कथात्मक विवरण है।

कथात्मक साहित्य की तरह ही इसमें भी एक कहानी, एक आंदोलन, एक आख्यान होता है। और केवल प्रतीकों को अलग कर देना और पूछना कि उनका क्या मतलब है, पर्याप्त नहीं है। लेकिन पूरे पाठ और यह क्या कर रहा है, इसके प्रति सचेत रहना होगा।

तो अध्याय 12 में हमें जिस पहले दिलचस्प प्रतीक से परिचित कराया गया है वह यह महिला है जिसके सिर पर 12 सितारे हैं। और इसका अधिकांश भाग पुराने नियम से आता है। संभवतः यहाँ की महिला पुराने नियम के इज़राइल का प्रतीक है।

और हम देखेंगे कि अध्याय के शेष भाग में इज़राइल का ईश्वर के लोगों के रूप में यह संदर्भ यीशु के अपने अनुयायियों में विलीन हो जाएगा। जिन्हें अध्याय 12 के अंत में उन लोगों के रूप में वर्णित किया गया है जो रखते हैं... अध्याय 12 और अंतिम श्लोक देखें। जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु की गवाही पर चलते हैं।

स्पष्ट रूप से उनके चर्च, यीशु के अनुयायियों का संदर्भ। तो एक तरह से हम इस्राएल के परिप्रेक्ष्य से ईश्वर की एक प्रजा को देखने जा रहे हैं। लेकिन फिर भी यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर के लोग जिनमें अन्यजाति भी शामिल हैं।

उसका चर्च. हालाँकि लेखक ने स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया है कि एक कब दूसरे में विलीन हो जाता है। लेकिन मुख्य रूप से उनकी रुचि ईश्वर के एक ही लोगों को चित्रित करने में है।

इसमें इज़राइल और भगवान के लोग, चर्च दोनों शामिल हैं। लेकिन हम अध्याय 12 देखने जा रहे हैं जो एक कहानी का अनुसरण करता प्रतीत होता है। शुरुआत इस महिला से होती है जो संभवतः पुराने नियम में ईश्वर के लोगों, इज़राइल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है।

और इस महिला को ऐसे दर्शाया गया है जैसे वह एक बच्चे को जन्म देने वाली है। और इससे पहले कि हम उस बच्चे की पहचान पर गौर करें, लेखक एक और आंकड़े का परिचय देता है। इस पाठ में काम करने वाला यह भयानक अजगर स्त्री का पीछा करना है।

क्योंकि महिला एक ऐसे बच्चे से गर्भवती है जिसकी पहचान पुराने नियम के भ्रम की ओर स्पष्ट रूप से की गई है। इस बच्चे की पहचान एक नर बच्चे के रूप में की गई है जो लोहे के राजदंड के

साथ सभी देशों पर शासन करेगा। भजन अध्याय 2 और श्लोक 8 की ओर एक स्पष्ट संकेत। जिसे पुराने नियम के भजन में अक्सर शाही भजन या मसीहाई भजन के रूप में दर्शाया गया है।

इसे नए नियम में यीशु मसीह के संदर्भ में उठाया गया है। तो लेखक पुराने नियम का हवाला देकर यह स्पष्ट करता है कि यह महिला जिस बच्चे से गर्भवती है वह कोई और नहीं बल्कि ईसा मसीह हैं। मसीहाई शासक, दाऊद का पुत्र।

जो भजन अध्याय 2 की पूर्ति में लोहे के राजदंड के साथ सभी राष्ट्रों पर शासन करेगा। तो अब अजगर इस बच्चे को निगलने और नष्ट करने के लिए महिला का पीछा करता है। लेकिन जैसा कि पाठ स्पष्ट रूप से इंगित करता है, बच्चे को इस अजगर के चंगुल या दांतों से बचाया गया है। और ऊपर उठाया जाता है और स्वर्ग पर चढ़ाया जाता है।

इसलिए ड्रैगन को निराश करना और ड्रैगन को उसके शिकार से वंचित करना। अब यह, एक दिलचस्प बात यह कहानी है जैसा कि इस पाठ में बताया गया है। हालाँकि कोई इसे स्पष्ट रूप से एक अन्य कहानी से पहचान सकता है जिसका उल्लेख हम बस एक क्षण में करेंगे।

ग्रीको-रोमन दुनिया में एक आम कहानी को भी दर्शाता है। यानी ऐसे कई ग्रीको-रोमन मिथक हैं जो एक जैसी कहानी या आख्यान का अनुसरण करते हैं। वह एक देवी है जो पुत्र को जन्म देने वाली है।

और एक अजगर या जानवर की आकृति जो उसका पीछा करती है और बेटे को निगलने की कोशिश करती है। और आमतौर पर बेटा होता है, कभी-कभी महिला बेटे को जन्म देती है। और एक कहानी में बेटे को बड़ा होने तक एक द्वीप पर ले जाया जाता है।

और फिर वह वापस आता है और उस अजगर को मार डालता है जो सबसे पहले महिला का पीछा कर रहा था। और आमतौर पर बेटा एक देवता है, ग्रीको-रोमन देवताओं में से एक। लेकिन ऐसा लगता है कि जॉन इस कहानी को लेते हैं, उस मिथक पर विश्वास नहीं करते।

लेकिन एक सामान्य कहानी लें और दिखाएं कि इस कहानी में वास्तव में ऐतिहासिक वास्तविकता है। अर्थात्, प्रकाशितवाक्य 12 को पढ़ना और न देखना कठिन है, कम से कम सारांश रूप में। बहुत अलग रूप में, अधिक प्रतीकात्मक रूप में, ईसा मसीह के जन्म की कहानी।

लेकिन ध्यान दें कि यह संपीड़ित है। बच्चे का जन्म होते ही उसे स्वर्ग में ले जाया जाता है, बड़ा किया जाता है और स्वर्ग में चढ़ाया जाता है। तो इसमें हम संक्षिप्त रूप में जन्म और वास्तव में जीवन और फिर पुनरुत्थान और मसीह के स्वर्गारोहण का संदर्भ देखते हैं।

इस प्रकार बेटे को मारने और नष्ट करने की ड्रैगन की कोशिश विफल हो गई। यह बहुत दिलचस्प है कि श्लोक 9 में बाद में ड्रैगन की पहचान की गई है, फिर से लेखक ने इस ड्रैगन को पुराने नियम के संदर्भ से जोड़कर हमारे लिए इसकी पहचान की है। वह कहता है, अजगर को, उस प्राचीन साँप को, जिसे शैतान या शैतान कहा जाता है, जो सारे जगत को भरमाता है, नीचे फेंक दिया गया।

प्राचीन साँप का वह सन्दर्भ स्पष्ट रूप से प्रकाशितवाक्य 12 के इस अजगर की पहचान साँप से करता है, वह साँप जिसने अदन के बगीचे में आदम और हव्वा को धोखा दिया था। और उसकी पहचान शैतान या शैतान के रूप में करता है। ईश्वर और उसके उद्देश्यों के इस प्राथमिक प्रतिपक्षी को संदर्भित करने के लिए नए नियम में अन्यत्र पाए जाने वाले शब्दों का उपयोग करना ।

हम बस एक क्षण में उस पर लौटेंगे, उत्पत्ति का वह संदर्भ। लेकिन कुछ अन्य महत्वपूर्ण सन्दर्भ सबसे पहले ध्यान दें कि यह महिला रेगिस्तान की ओर भाग जाती है। फिर हमें भौगोलिक दृष्टि से यह सवाल नहीं पूछना चाहिए कि यह कहां होता है और क्या हो रहा है।

इस बिंदु पर रेगिस्तान केवल संरक्षण का प्रतीक था। इसलिए महिला को रेगिस्तान में भाग जाने का मतलब यह है कि भगवान अब अपने लोगों की रक्षा करते हैं। यद्यपि अजगर उसका पीछा करता है, परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करता है और उनकी देखभाल करता है।

तो फिर से महिला किसी शाब्दिक वास्तविक महिला का जिक्र नहीं कर रही है, बल्कि प्रतीकात्मक है। फिर से, यह परमेश्वर के लोगों को एक महिला, एक पत्नी, यहोवा की दुल्हन या ऐसा कुछ के रूप में संदर्भित करने की पुराने नियम की धारणा को प्रतिबिंबित कर सकता है। इसलिए पुराने नियम में भी आप एक महिला को अक्सर पुराने नियम में ईश्वर के लोगों, इज़राइल का प्रतीक पाते हैं।

इसलिए इस महिला का रेगिस्तान में भाग जाना, यह उसके संरक्षण और सुरक्षा का स्पष्ट संकेत है। और इस अजगर की आकृति, जिसे शैतान के रूप में पहचाना जाता है, के क्रोध के सामने भी भगवान ने उसे बनाए रखा और उसकी देखभाल की। लेकिन एक और संदर्भ निम्नलिखित है कि आपके पास 7-9 में शैतान की माइकल और उसके स्वर्गदूतों के साथ युद्ध करने और पराजित होने और स्वर्ग से बाहर निकाले जाने की यह दिलचस्प कहानी है।

और सवाल यह है कि यह कब हुआ? यह कहां होता है? ऐसा यहाँ पाठ में क्यों होता है? सबसे अधिक संभावना यह है कि यह श्लोक 7 से लेकर श्लोक 12 तक आगे की व्याख्या है। दूसरे शब्दों में, यह संभवतः 1-6 के बाद कालानुक्रमिक रूप से घटित नहीं हो रहा है। तो इसका मतलब यह नहीं है कि ड्रैगन ने ऐसा किया और फिर उसके बाद, तो हमारे पास इतिहास में यह घटना घट रही है।

लेकिन इसके बजाय मुझे लगता है कि श्लोक 7-12 पीछे जा रहे हैं और अधिक विस्तार से समझा रहे हैं कि 1-6 में क्या होता है। और इसलिए आपके पास माइकल और उसके स्वर्गदूतों के बीच यह लड़ाई है। याद रखें कि सर्वनाशी साहित्य पृथ्वी पर जो हो रहा है उसके प्रतिबिंब के रूप में पारलौकिक स्वर्गीय वास्तविकता से संबंधित है।

तो अब, सच्चे सर्वनाशकारी अंदाज़ में, जॉन स्वर्ग में इस युद्ध के स्वर्गीय दृश्य को देखता है जहाँ माइकल और उसके स्वर्गदूत इस ड्रैगन के खिलाफ लड़ते हैं जिसका परिचय हमें छंद 1-6 में दिया गया है। और उसके अनुचर, या उसके स्वर्गदूत, और वे लड़ते हैं और युद्ध में संलग्न होते हैं। और श्लोक 8-9 में, शैतान को गिरा दिया जाता है और पराजित कर दिया जाता है।

और कोई जानना चाहता है कि यह कब हुआ और यह किस घटना का जिक्र कर रहा है? मुझे लगता है कि कुंजी श्लोक 10-12 को पढ़ना है। और विशेषकर श्लोक 10-11, तभी मैंने एक तेज़ आवाज़ सुनी। रहस्योद्घाटन में आवाज़ें अक्सर घटनाओं की व्याख्या करती हैं।

तो आप कुछ व्यक्तियों, स्वर्गीय आवाज़ों या भजनों या देवदूत प्राणियों को बातें कहते हुए पाएंगे। रहस्योद्घाटन में अक्सर भाषण या आवाज़ें या गीत घटित होने वाली घटनाओं की व्याख्या करते हैं। और मुझे लगता है कि श्लोक 10-11 शायद माइकल और उसके स्वर्गदूतों द्वारा ड्रैगन और उसके स्वर्गदूतों को हराने की इस घटना की व्याख्या करते हैं।

श्लोक 11, मैं इसे फिर से पढ़ूंगा। तब मैं ने ऊंचे शब्द को यह कहते हुए सुना, कि अब परमेश्वर का उद्धार, और सामर्थ, और राज्य, और उसके मसीह का अधिकार आ गया है; क्योंकि हमारे भाइयोंपर जो दिन रात हमारे परमेश्वर के साम्हने उन पर दोष लगाया करते थे, उन पर दोष लगानेवाला नीचे गिरा दिया गया है। श्लोक 7-9.

उन्होंने उस पर जय पाई, अर्थात् ये अभियोक्ता, मैं समझता हूं, कि परमेश्वर की प्रजा हैं, उन्होंने मेमे के लोहू के द्वारा, और अपनी गवाही के वचन के द्वारा उस पर जय पाई। मुझे लगता है कि श्लोक 7-9 फिर से यीशु मसीह की मृत्यु पर शैतान और उसके स्वर्गदूतों की हार का एक प्रतीकात्मक चित्रण है। मेमे का खून या यीशु मसीह की मृत्यु शैतान और उसके स्वर्गदूतों की अंतिम हार थी।

तो जैसा कि मैंने कहा, 10-12 में इस आवाज द्वारा 7-10 की व्याख्या की गई है और आगे बताया गया है कि 1-6 में क्या हो रहा है। शैतान की हार का असली स्रोत क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु

है। और यह आगे बताता है कि वह स्त्री को निगलने की कोशिश क्यों करता है, वह स्त्री के पीछे क्यों जाता है और उसे बचाने और सुरक्षित करने के लिए उसे रेगिस्तान में रखने की आवश्यकता क्यों है, श्लोक 12 है।

शैतान, वह अजगर जिसे गिरा दिया गया है, वह अब क्रोध से भर गया है क्योंकि वह जानता है कि उसका समय कम है। तो शेष 12-13 में हम जो पढ़ने जा रहे हैं वह 12 के पहले भाग में जो होता है उसका परिणाम है। शैतान को हरा दिया गया है और नीचे गिरा दिया गया है, वह बच्चे को नष्ट करने की अपनी क्षमता से वंचित हो गया है।

अब, क्योंकि वह पराजित हो गया है, उसे यीशु मसीह की मृत्यु पर स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया है, मसीह का खून, मसीह की मृत्यु ने ड्रैगन की हार का कारण बना दिया है। तो अब जब वह जानता है कि उसका समय कम है, तो अब वह उस महिला और उसकी संतान पर अपना क्रोध और रोष प्रकट करने जा रहा है। तो यह हमें अध्याय 12 के शेष भाग पर लाता है।

जब अजगर ने देखा कि उसे नीचे फेंक दिया गया है, तो अब वह उस महिला के पीछे चला गया, जिसके बारे में हमने कहा कि यह भगवान के लोगों का प्रतीक है। लेकिन शायद अब महिला सिर्फ इसराइल राष्ट्र से कहीं अधिक है। जैसे ही अध्याय 12 समाप्त होता है, महिला में वे लोग शामिल हैं, जो परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु मसीह की गवाही का पालन करते हैं, जो स्पष्ट रूप से परमेश्वर के नए लोगों, यहूदी और गैर-यहूदी दोनों का संदर्भ होगा, जो उस चर्च का निर्माण करते हैं जो यीशु मसीह का था और मसीह से संबंधित होने के कारण वे परमेश्वर के लोग हैं।

लेकिन यहां एक दिलचस्प विरोधाभास चल रहा है कि, अगर हम इसे शाब्दिक स्तर पर समझने की कोशिश करते हैं, तो हम इसके साथ एक काम करेंगे, लेकिन मुझे लगता है कि इसे समझने का सबसे अच्छा तरीका पढ़ना है यह प्रतीकात्मक रूप से, रहस्योद्घाटन के रूप में, रहस्योद्घाटन की शैली के रूप में, मुझे लगता है कि हमें इसे पढ़ने के लिए कहता है। और वह यह है कि, आप देखेंगे कि महिला और उसकी संतानों के बीच एक विरोधाभास है। हमने कहा है

कि महिला भगवान के लोगों को संदर्भित करती है, लेकिन फिर महिला की संतान कौन हैं? क्या ये कोई और हैं? क्या महिला इज़राइल और उसकी संतान कोई और हैं, शायद चर्च, या अन्यजाति? हम स्त्री और उसकी संतान को कैसे समझें? क्या ये दो अलग-अलग संस्थाएँ हैं? ठीक है, अगर हम इसे शाब्दिक रूप से पढ़ते हैं, तो यह मामला प्रतीत होता है, लेकिन मुझे लगता है कि वास्तविक सर्वनाशी फैशन में समझना बेहतर है, हमें इसे प्रतीकात्मक रूप से पढ़ने की ज़रूरत है, इसलिए महिला और उसकी संतान, हालांकि, इसका कोई मतलब नहीं है एक शाब्दिक स्तर.

प्रतीकात्मक स्तर पर, संभवतः वे दोनों एक ही चीज़ को संदर्भित करते हैं। महिला और उसकी संतान संभवतः दोनों परमेश्वर के लोगों के प्रतीक हैं। लेकिन, वे संभवतः दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से भगवान के लोगों के प्रतीक हैं।

ध्यान दें, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, पद 6 में महिला रेगिस्तान की ओर भाग जाती है, जहां वह पहले से ही भगवान द्वारा तैयार की गई जगह पर होती है, जहां 1260 दिनों तक उसकी देखभाल की जाती है। फिर श्लोक 14 में ध्यान दें, ड्रैगन अब महिला के पीछे जाता है, और यह कहता है, इस तथ्य के आधार पर कि वह इस बच्चे, यीशु मसीह को नष्ट करने में सक्षम नहीं था, जिसे लोहे के राजदंड के साथ राष्ट्रों पर शासन करना है, और इस पर आधारित है तथ्य यह है कि यह उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से है कि शैतान को नष्ट कर दिया गया है और स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया है और पराजित किया गया है, अब, अपने क्रोध में, वह इस महिला के पीछे जाता है, लेकिन पद 14, महिला को एक बड़े उकाब के दो पंख दिए गए थे, ताकि वह रेगिस्तान में उसके लिए तैयार किए गए स्थान पर उड़ सकती है, जहां सांप की पहुंच से दूर, एक समय, कई समय और आधे समय तक उसकी देखभाल की जाएगी। तो, इन दोनों छवियों में, आपके पास यह महिला एक जगह, रेगिस्तान में जा रही है, जहां उसे संरक्षित किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, शैतान की पहुंच से बाहर, फिर भी, ऐसा होने के बाद, कविता 17 से शुरू होकर, सभी प्रयासों के बाद इस महिला को नष्ट करने के लिए, यहां तक कि जब वह उस तक पहुंच सकता है, तब भी पृथ्वी खुल जाती है और महिला को नष्ट करने के शैतान के प्रयास को निगल जाती है, इसलिए महिला संरक्षित रहती है, शैतान उस तक नहीं पहुंच सकता है।

इसलिए, श्लोक 17 में वह क्रोधित हो जाता है, और वह उसकी बाकी संतानों के पीछे चला जाता है, जिन्हें, जाहिर तौर पर, वह हासिल करने में सक्षम है। तो, हमें इससे क्या मतलब? यदि स्त्री और बच्चे एक ही बात का उल्लेख करते हैं, तो शैतान स्त्री तक कैसे नहीं पहुँच सकता, परन्तु वह उसकी संतान का पीछा कर सकता है? मुझे लगता है, यह सुझाव देने का जॉन का तरीका है, एक ओर, भगवान के लोग, चर्च, रखे और संरक्षित किए जाते हैं, शैतान अंततः उन्हें नष्ट नहीं कर सकता और उन्हें छू नहीं सकता। फिर भी, यह महिला का दृष्टिकोण है।

फिर भी, उसकी संतान के दृष्टिकोण से, परमेश्वर के लोगों को उत्पीड़न सहना पड़ सकता है, उनमें से कुछ को मृत्यु भी हो सकती है। फिर भी, अंततः, परमेश्वर के चर्च और उसके लोगों को, विशेष रूप से आध्यात्मिक रूप से, नुकसान नहीं पहुँचाया जा सकता है और उन्हें नष्ट नहीं किया जा सकता है। शारीरिक उत्पीड़न परमेश्वर के लोगों के परमेश्वर के साथ संबंध को नष्ट करने का काम नहीं कर सकता।

और हम देखेंगे, अंततः, एक नई रचना के माध्यम से, ईश्वर वास्तव में अपने लोगों को न्यायसंगत ठहराएगा। तो, अंततः, चाहे शैतान उत्पीड़न के माध्यम से शारीरिक रूप से परमेश्वर के लोगों के लिए कितनी भी समस्याएँ पैदा कर सकता है, संतान का दृष्टिकोण यही है। भले ही वह शारीरिक और अस्थायी रूप से चर्च के लिए समस्याएँ पैदा कर सकता है, महिला के दृष्टिकोण से, अंततः, चर्च को नुकसान नहीं पहुँचाया जा सकता और नष्ट नहीं किया जा सकता।

वे अभी भी परमेश्वर के लोग हैं जिन्हें वह निभाएगा, और वह उनसे किए गए अपने वादों को निभाएगा। तो, महिला और उसकी संतान संभवतः एक ही इकाई, चर्च, भगवान के लोगों को संदर्भित करते हैं, फिर भी इसे दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा जाता है। वे आध्यात्मिक रूप से संरक्षित हैं, फिर भी वे अभी भी इस ड्रैगन के हाथों उत्पीड़न के अधीन हैं।

आखिरी दो चीजें जो मैं देखना चाहता हूँ, वह यह है कि हम श्लोक 14 में साढ़े तीन साल की संख्या, या समय, समय और आधे समय के बारे में पहले ही बात कर चुके हैं, और मैंने पहले ही

सुझाव दिया है कि यह भाषा नहीं होनी चाहिए इसका शाब्दिक अर्थ अतीत या भविष्य की एक विशिष्ट अवधि को संदर्भित करना है, लेकिन साढ़े तीन साल पहली शताब्दी से शुरू होकर चर्च के उत्पीड़न की पूरी अवधि का प्रतीक है। फिर से, जॉन चर्चों को यह समझाने में मदद करने की कोशिश कर रहा है कि वे रोमन शासन के तहत क्या अनुभव कर रहे हैं, खासकर उन ईसाइयों के लिए जो पीड़ित हैं, या यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जो पीड़ित नहीं हैं, लेकिन उन्हें समझौता करना बंद करने की आवश्यकता के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। और यीशु मसीह को गले लगाना, चाहे परिणाम कुछ भी हो। जॉन अब उनके संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को समझने में उनकी मदद करने की कोशिश कर रहे हैं।

इसलिए, मेरा मानना है कि साढ़े तीन साल का तात्पर्य केवल चर्च के अस्तित्व की पूरी अवधि से है, क्योंकि यह उत्पीड़न से संघर्ष करता है जो मुख्य रूप से शैतान द्वारा उकसाया जाता है। दुनिया के साथ चर्च के संघर्ष की पूरी अवधि, जिसे जॉन अब स्पष्ट कर रहा है, उसके पीछे कोई और नहीं बल्कि स्वयं शैतान खड़ा है। इस कहानी में जोड़ने के लिए एक अन्य आयाम श्लोक 9 में शैतान के उस संदर्भ पर वापस जाना है, जहां उसे पुराने सांप के रूप में वर्णित किया गया है, जो उत्पत्ति अध्याय 3 से एक स्पष्ट अंतरपाठीय संबंध बनाता है। मैं इस पाठ को फिर से देखना चाहता हूं, लेकिन सबसे पहले मैं उत्पत्ति 3, 15-16 को पढ़ना चाहता हूं, और फिर जब वह पाठ हमारे कानों में गूंजता है, तो प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 और 13 पर वापस जाएं, और संभावित पत्राचार को नोट करें।

तो, अध्याय 3, शैतान द्वारा धोखे से पाप करने के लिए आदम और हव्वा को प्रलोभित करने के ठीक बाद, जो दिलचस्प है, प्रकाशितवाक्य के अध्याय 12 के श्लोक 9 में ध्यान दें, ड्रैगन को वह कहा गया है जो पूरी दुनिया को भटकाता है। शैतान को मुख्य रूप से एक धोखेबाज के रूप में चित्रित किया गया है, और ठीक इसी तरह वह आदम और हव्वा को धोखा देकर उनसे पाप करवाता है। लेकिन फिर, उसके बाद, भगवान ने पद 15 और 16 में साँप और स्त्री से, साँप से और हव्वा से बात करना शुरू किया।

उसने साँप से कहा, मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा। वह तेरे सिर को, अर्थात् स्त्री का वंश तेरे सिर को, अर्थात् साँप के सिर को कुचल डालेगा, और तू, साँप, उसकी एड़ी को, अर्थात् स्त्री की एड़ी को, कुचल डालेगा। और फिर आयत 16 में उस ने स्त्री से कहा, मैं तेरे प्रसव पीड़ा को बहुत बढ़ाऊँगा, तू पीड़ा सहकर बच्चे जनेगी।

अब उन सभी तत्वों को ध्यान में रखें, और वापस जाएं और प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 और 13 पढ़ें। ध्यान दें कि यह महिला और अजगर के बीच संघर्ष से शुरू होता है, महिला और अजगर के बीच उसके बेटे को लेकर लड़ाई या संघर्ष होता है। और बेटा पैदा होने के बाद भी अजगर महिला के पीछे पड़ जाता है।

तो यह उत्पत्ति 3 श्लोक 15 का पहला भाग है। लेकिन यह भी ध्यान दें कि क्या होता है, ड्रैगन अंततः स्त्री के पीछे नहीं, बल्कि स्त्री के वंश के पीछे जाता है। बीज की उस भाषा पर ध्यान दें।

लेकिन फिर कोई पूछ सकता है, क्या उत्पत्ति यह नहीं कहती कि ड्रैगन का वंश स्त्री के वंश के बाद आएगा? खैर यहीं पर अध्याय 13 आता है, प्रकाशितवाक्य। ये दो पशु आकृतियाँ ड्रैगन के बीज हैं। उनका वर्णन बिल्कुल उनके जैसा ही है।

वह उन्हें बुलाने के लिए 12 बजे के अंत में समुद्र के किनारे खड़ा होता है। तो आपके पास ये दोनों तत्व हैं। अध्याय 12 में ड्रैगन और स्त्री के बीच संघर्ष है, और अध्याय 13 में ड्रैगन के बीज और अध्याय 12 और 13 में स्त्री के बीज के बीच भी संघर्ष है।

ध्यान दें कि उत्पत्ति वृत्तांत में 3.15 में चोट लगने, एड़ी पर चोट लगने का संदर्भ है, जो सीधे तौर पर शैतान के पीछे जाने का संकेत दे सकता है, वह बेटे को निगल जाना चाहता है। और इसलिए वह अपनी एड़ी को चोट पहुंचाने में सक्षम है, खासकर यीशु मसीह की मृत्यु के कारण। परन्तु फिर यह कहता है कि पुत्र, स्त्री का वंश, उसका सिर कुचल देगा।

और सवाल यह है कि हमें ड्रैगन का कुचला हुआ सिर कहां मिलेगा? खैर, एक तरह से आप अनुमान लगा सकते हैं कि प्रकाशितवाक्य के अध्याय 12 के 7 से 12 में शैतान की लड़ाई और हार शैतान के सिर को कुचलना है। लेकिन यदि आप छलांग लगाते हैं, हालांकि यह विशेष रूप से ड्रैगन का संदर्भ नहीं है, बल्कि ड्रैगन की संतानों में से एक का संदर्भ है, तो उस जानवर नंबर एक पर ध्यान दें, जिसे बिल्कुल ड्रैगन की तरह वर्णित किया गया है, ध्यान दें कि इसमें उसके बारे में क्या कहा गया है। अध्याय 13 के श्लोक 3 में इस जानवर का वर्णन करते हुए कहा गया है, जानवर के एक सिर पर एक घातक घाव लग रहा था, लेकिन घातक घाव ठीक हो गया था।

अब हो सकता है कि अन्य चीजें भी चल रही हों, लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि, मैं विशेष रूप से दो बातें सोचता हूं। नंबर एक, मुझे लगता है कि यह यीशु मसीह की नकल है। दूसरे शब्दों में, यह जानवर को उसी तरह चित्रित कर रहा है जैसे यीशु मसीह मर गया था और अब जीवित है, प्रकाशितवाक्य का अध्याय 1, अब जानवर मसीह की नकल करने में सक्षम प्रतीत होता है।

वह बहुत शक्तिशाली है। लेकिन दूसरा, मुझे लगता है कि यह संभवतः उत्पत्ति वृत्तांत की ओर एक संकेत है। यह ड्रैगन के सिर पर उसके अनुयायियों में से एक, उसकी संतानों में से एक के सिर को कुचलने के माध्यम से कुचलने वाला झटका है।

अध्याय 12 की शुरुआत में एक और दिलचस्प बात पर भी ध्यान दें। ध्यान दें कि महिला का वर्णन कैसे किया गया है। वह गर्भवती थी और बच्चे को जन्म देने के समय दर्द से चिल्ला रही थी, जो संभवतः उत्पत्ति 3.16 और महिला के वादे को दर्शाता है कि वह दर्द से बच्चे को जन्म देगी, कि वह बच्चों को जन्म देगी, कि वह दर्द से चिल्लाएगी।

अब सवाल यह है कि इसका महत्व क्या है? उत्पत्ति अध्याय 3 के इस संकेत का व्याख्यात्मक महत्व क्या हो सकता है? इससे पाठ के अर्थ में क्या फर्क पड़ता है? मुझे लगता है ये यही हो सकता है। हम पहले ही देख चुके हैं कि अध्याय 12 और 13 में चल रही चीजों में से एक, जॉन अपने पाठकों को उनके संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को समझने में मदद करने की कोशिश कर रहा है। रहस्योद्घाटन की पृष्ठभूमि पर वापस जाने के लिए, रोमन साम्राज्य में रहने वाले ईसाइयों

के लिए, उनमें से कई रोम के हाथों शत्रुता का अनुभव कर रहे थे, यह अब उनके संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को समझा रहा है।

और जॉन जो करता है वह यह है कि वह उनके संघर्ष को पहली शताब्दी में एक बड़ी कहानी या कथा के हिस्से में रखता है जो सृजन तक जाता है। मानो जॉन अपने पाठकों को बताना चाहता है कि आप रोम के हाथों जो अनुभव कर रहे हैं, उसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। यह किसी सदियों पुराने संघर्ष के हिस्से से कम नहीं है जो सृजन तक चला आ रहा है।

आप जो देख रहे हैं वह बस यह निरंतर चल रहा संघर्ष है जो सृष्टि की शुरुआत से ही चला आ रहा है। और अब आप इसे अपनी कहानी में फिर से उभरता हुआ देख सकते हैं। हालाँकि मुख्य बात यह है कि मसीह पहले ही मौत का झटका दे चुका है।

शैतान पहले ही हार चुका है और जानता है कि उसका समय कम है। तो पहली शताब्दी के एशिया माइनर के ईसाई, और हम वास्तव में किसी भी युग के ईसाई कह सकते हैं जो खुद को समान परिस्थितियों में पाते हैं, हिम्मत रख सकते हैं क्योंकि, नंबर एक, वे जानते हैं कि यह एक कहानी से कम नहीं है, एक सदियों पुरानी कहानी है, एक संघर्ष जो सृष्टि तक चला जाता है। और दूसरा, मसीह ने पहले ही मौत का झटका दे दिया है और दुश्मन, आदिम दुश्मन, शैतान को हरा दिया है, और इसलिए उसका समय कम है।

इसलिए, वे उचित प्रतिक्रिया दे सकते हैं। वे डटे रह सकते हैं और अभिभूत और हतोत्साहित नहीं हो सकते क्योंकि अब वे अपनी स्थिति को एक नए दृष्टिकोण और एक नई रोशनी में देखने में सक्षम हैं। तो ये अध्याय पहली शताब्दी में चर्च के संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को चित्रित और समझाते हैं।

फिर से, अनुभवजन्य रूप से, वे रोमन साम्राज्य और उसके अनुरूप होने के दबाव और रोमन साम्राज्य द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों पर नज़र डालते हैं। लेकिन फिर जॉन, सच्चे सर्वनाशकारी अंदाज में, एक अलग परिप्रेक्ष्य चित्रित करता है और कहता है कि चीजें वैसी नहीं हैं

जैसी वे वास्तव में दिखाई देती हैं। लेकिन आप दुनिया में जो कुछ भी देखते हैं उसके पीछे सदियों पुराना संघर्ष और यहां तक कि एक स्वर्गीय लड़ाई भी है जो यह निर्धारित करती है कि वर्तमान में क्या हो रहा है।

यह उन्हें अपने संघर्ष को इतिहास और उसके लोगों के लिए भगवान के बड़े, व्यापक इरादे के संदर्भ में रखने में मदद करता है। अध्याय 13 में, जैसा कि मैंने कहा, हमारा परिचय शैतान के दो साथियों से कराया जाता है। वह दो अन्य अनुयायियों को बुलाने के लिए समुद्र पर खड़ा होता है जो पृथ्वी और समुद्र दोनों से निकलते हैं।

इन दोनों जानवरों की पृष्ठभूमि संभवतः दोनों पुराने नियम में है। कभी-कभी आपको जानवरों जैसी आकृतियाँ या ड्रैगन जैसी आकृतियाँ मिलती हैं। हमने यशायाह अध्याय 51 और श्लोक 9 को देखा। राहब, वह साँप जो छेदा गया है, समुद्र का साँप।

तो आपको समुद्र से जुड़े जानवरों का यह विचार सर्वनाशी साहित्य में, बल्कि पुराने नियम में भी मिलता है। कभी-कभी आपको दो जानवरों की धारणा मिलती है, जिन्हें अक्सर बेहेमोथ और लेविथान का नाम दिया जाता है। जॉन के मन में वह पाठ और अन्य पाठ हो सकते हैं।

लेकिन वह स्पष्ट रूप से पारंपरिक कल्पना का सहारा ले रहा है, जानवर या ड्रैगन जैसी आकृतियाँ ले रहा है और विभिन्न व्यक्तियों या राष्ट्रों को संदर्भित करने के लिए प्रतीकात्मक रूप से उनका उपयोग कर रहा है। तो जब मैं इस पाठ को यहां पढ़ता हूँ, तो सबसे अधिक संभावना है, ठीक है, समर्थन करने के लिए, जब मैं इस पाठ को पढ़ता हूँ, तो हमें सबसे पहले यह पूछना होगा कि इन जानवरों की आकृतियों द्वारा संप्रेषित अर्थ या अर्थ क्या है? और दूसरा, वे क्या या किसका उल्लेख कर सकते हैं? तो सबसे पहले, जानवर, सर्पिन, ड्रैगन जैसी आकृतियों का उपयोग करके, चाहे पुराने नियम या सर्वनाश साहित्य में या यहां तक कि ग्रीको-रोमन साहित्य में, एक जानवर या साँप जैसी आकृति आमतौर पर बुराई और अराजकता और दुश्मनी, विनाश की विशेषताओं का प्रतीक है, सब कुछ जीवन और व्यवस्था के विपरीत है, आदि। इसलिए चित्रण

करके, एक जानवर का जिक्र करके, मुझे लगता है कि जॉन उन सभी चीजों को संप्रेषित करना चाहता है।

वह जिस भी बात का जिक्र कर रहा है, वह उसे अतीत की पशु आकृतियों, या अन्य साहित्य की पशु आकृतियों से जोड़ना चाहता है। अर्थात्, वे व्यक्ति या घटनाएँ या राष्ट्र जो अराजकता और बुराई से जुड़े हैं, और जो शत्रुतापूर्ण है, जो राक्षसी है, जो विनाशकारी है। हालाँकि, प्रश्न यह है कि अध्याय 13 में ये दो जानवर किस ओर संकेत करते हैं? पहले से शुरू करते हुए, मुझे यह बहुत मुश्किल लगता है कि पहली सदी के पाठक, फिर से याद रखें, रहस्योद्घाटन एक पत्र है, यह एक भविष्यवाणी है, यह पहले पाठकों को उनकी स्थिति को समझने के लिए एक संदेश देने की कोशिश कर रहा है।

मुझे यह सोचना मुश्किल लगता है कि पहली सदी का कोई पाठक इस पहले जानवर की पहचान पहली सदी के रोम और शायद रोमन सम्राट के अलावा किसी और चीज़ से करेगा। और इसलिए लेखक फिर से जो कर रहा है, वह प्रयास कर रहा है, पाठक अपनी पहली शताब्दी के संदर्भ में देखते हैं और इस गौरवशाली, विशाल रोमन साम्राज्य को देखते हैं, और वे सम्राट को अपने सिंहासन पर देखते हैं और वह शांति और इन सभी आशीर्वादों के लिए जिम्मेदार है और समृद्धि, और उनसे उसके प्रति निष्ठा रखने का आह्वान किया जाता है। जॉन द्वारा रोमन साम्राज्य या स्वयं सम्राट को एक पशु के रूप में चित्रित करने का क्या प्रभाव है? यह पाठकों को यह दिखाने के लिए है कि यह वैसा नहीं है जैसा दिखाई देता है।

सदियों पुराने सांप से कम नहीं जुड़ा है, जो सृजन कथा तक जाता है। वास्तव में, यह भी ध्यान दें कि इस जानवर का वर्णन कैसे किया गया है, यह जानवर नंबर एक है, यह कहता है, लोग अजगर की पूजा करते थे, या लोग अजगर की पूजा करते थे, क्योंकि उसने जानवर को अधिकार दिया था। अतः अध्याय 12 में ड्रैगन अपना अधिकार जानवर को देता है।

जानवर अब एक तरह से ड्रैगन का प्रतिनिधि है, और उसका एकमात्र लक्ष्य लोगों को जानवर की ओर इशारा करना है। तो यह, रोमन समाज में, रोमन वाणिज्य में शामिल होना, और सम्राट की

पूजा करने और उसके प्रति निष्ठा दिखाने के अवसरों में भाग लेना, उतना हानिरहित नहीं है जितना लगता है। लेकिन अब, जॉन कहते हैं, इसके पीछे खुद ड्रैगन की पूजा करने से कम कुछ नहीं है।

लेकिन दूसरा जानवर कौन है? दूसरे शब्दों में, जानवर नंबर एक साम्राज्य है, सम्राट, जो पूजा की मांग करता है, जो रोमन साम्राज्य के रूप में पूरी पृथ्वी पर शासन करता है, और शायद सम्राट । जानवर नंबर दो कौन है? सबसे अधिक संभावना है, दूसरा जानवर, जैसा कि आप प्रकाशितवाक्य 13 के छंद 11 से 18 तक पढ़ते हैं, आप देखेंगे कि दूसरे जानवर का वर्णन भी जानवर नंबर एक और ड्रैगन के समान ही किया गया है। पद 11 पर ध्यान दें, उसके मेमने के समान दो सींग थे, परन्तु वह अजगर के समान बोलता था।

तो किसी तरह से, जानवर नंबर दो, फिर से, ड्रैगन की संतान है। वह ड्रैगन का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन यह आगे कहा जाता है, उसने अपनी ओर से पहले जानवर के सभी अधिकार का प्रयोग किया।

तो आयत 11 से 18 में तीसरे जानवर, या दूसरे जानवर, भूमि के जानवर का मुख्य कार्य, रोमन साम्राज्य और जानवर नंबर एक पर लोगों का ध्यान आकर्षित करना और ध्यान आकर्षित करना है। सम्राट। सबसे अधिक संभावना है, जानवर नंबर दो शायद स्थानीय अभिजात वर्ग का प्रतीक है, जिन्होंने स्थानीय अर्थव्यवस्था या सात शहरों में बनाए गए और अस्तित्व में आए स्थानीय मंदिरों में भाग लेने के रूप में लोगों को बुतपरस्त पूजा या सम्राट पूजा में भाग लेने के लिए बढ़ावा दिया और यहां तक कि मांग भी की। किस रहस्योद्घाटन को संबोधित किया गया था। सबसे अधिक संभावना है, दूसरा जानवर अभिजात वर्ग, या कम से कम किसी भी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, जो पूजा को बढ़ावा देता है और बढ़ावा देता है, और पूजा करने के लिए मजबूर करता है, रोमन साम्राज्य और सम्राट, फिर से, सम्राट पूजा के अवसरों के माध्यम से, शाही पंथ की पूरी प्रणाली, और यहां तक कि बुतपरस्त पूजा और देवी रोमा के रूप में रोम की ओर ध्यान आकर्षित करना।

तो शायद, जानवर नंबर दो किसी ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करेगा जो व्यक्तियों को उसमें भाग लेने के लिए मजबूर करने के लिए जिम्मेदार है। श्लोक 14 दिलचस्प है। आयत 13 में कहा गया है, उसने, दूसरे जानवर ने, महान और चमत्कारी चिन्ह दिखाए, यहाँ तक कि लोगों के सामने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग भी गिरा दी।

उन चिन्हों के कारण जो उसे पहले पशु की ओर से करने का अधिकार दिया गया था, उसने पृथ्वी के निवासियों को धोखा दिया। उसने उन्हें उस जानवर के सम्मान में एक मूर्ति स्थापित करने का आदेश दिया, जो तलवार से घायल हो गया था और फिर भी जीवित था। फिर, जानवर की छवि स्थापित करना, क्या यह संभव है कि सम्राट के सम्मान में विभिन्न स्थानीय मंदिरों को संदर्भित किया जाए ? लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप इस पर ध्यान दें कि दोबारा धोखा देने, श्लोक 14 में पृथ्वी के निवासियों को धोखा देने की क्षमता और श्लोक 9 में ड्रैगन के वर्णन के बीच संबंध है। वह पूरी दुनिया को गुमराह करता है।

तो जो कुछ चल रहा है उसके मूल में, ऐसा लगता है जैसे जॉन कह रहा है कि जैसे ही लोग बाहर देखते हैं और इस विशाल साम्राज्य और इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले सभी लाभों और रोमन साम्राज्य के सभी ग्लैमर और चमक को देखते हैं, जॉन जो देखना चाहता है वह यह है कि यह चाल का हिस्सा है, यह भ्रामक चाल का हिस्सा है जो अंततः शैतान के पास ही जाता है। पाठकों को जानवर का अनुसरण करने के लिए धोखा देना। पाठकों को यह सोचने के लिए धोखा देने के लिए कि वे रोमन साम्राज्य की मूर्तिपूजक व्यवस्था में भाग लेकर यीशु मसीह में अपने विश्वास और यीशु मसीह तथा ईश्वर के प्रति निष्ठा से समझौता कर सकते हैं।

अब जॉन फिर से, क्या आप देखते हैं कि वह क्या कर रहा है? वह पहली सदी के रोम में जो कुछ चल रहा था उस पर बिल्कुल नई रोशनी डाल रहा है। वास्तव में, ध्यान दें कि वे दूसरे जानवर हैं जो पहले जानवर, रोमन साम्राज्य, सम्राट को बढ़ावा देने के प्रभारी लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे श्लोक 16 और 17 में उन लोगों के लिए आर्थिक प्रतिबंध लगाने में भी सक्षम हैं जो इसका पालन करने से इनकार करते हैं।

श्लोक 18, मैं शायद ही श्लोक 18, प्रसिद्ध संख्या 666 के बारे में कुछ कहे बिना समाप्त कर सकता हूँ, और इसके साथ सभी प्रकार की जंगली चीजों की गई हैं। एक उदाहरण जो मैं हमेशा बताना चाहता हूँ वह यह है कि जब मैं संयुक्त राज्य अमेरिका में मिनेसोटा में रह रहा था, मैं एक ईसाई संगीत समारोह में गया था और हमें अंदर जाने के लिए कलाई टैग की आवश्यकता थी और उन सभी के पास एक नंबर था और लगभग हर एक, पहले छह या सात नंबर समान थे, अंतिम तीन वे थे जिन्होंने पहचान बदल दी, यह घटनाओं को छोड़ने और वापस आने में सक्षम होने के लिए आपकी पहचान की तरह थी। जैसे ही मुझे अपना नंबर मिला, मैंने उसे देखा और अंतिम तीन नंबर 666 थे और कुछ व्यक्तियों ने इसका बड़ा फायदा उठाया होगा और यहां तक कि ऐसा कुछ पहनने से भी इनकार कर दिया होगा।

लेकिन मैं इस बारे में सोचता हूँ कि इस पाठ में क्या चल रहा है और यह संख्याओं को देखने की हमारी आधुनिक घटना से कैसे संबंधित है, कभी-कभी किसी के पास 666 के साथ एक फोन नंबर होगा या आप 666 के साथ लाइसेंस प्लेट देखेंगे और हम क्या करेंगे प्रकाशितवाक्य में जो चल रहा है उसके आलोक में उन चीजों को बनाएं। सबसे पहले, इस पाठ के आधुनिक अनुप्रयोगों के बारे में सोचते समय लागू होने वाला पहला स्पष्ट सिद्धांत एक बार फिर उस सिद्धांत को उजागर करना है, जॉन का क्या इरादा रहा होगा और उसके पाठकों ने सबसे अधिक क्या समझा होगा? और यह, मेरे दिमाग में, किसी व्यक्ति या क्रेडिट कार्ड या इंटरनेट में एम्बेडेड कंप्यूटर चिप्स या विशिष्ट पहचान के बारे में सभी प्रकार की आधुनिक अटकलों को स्वचालित रूप से खारिज कर देता है, चाहे वह सद्दाम हुसैन हो या कोई अन्य विशिष्ट व्यक्ति, यह सब बहुत परे है पहली सदी के लेखक और पाठक के क्षितिज। इसके अलावा, ध्यान दें कि यह आकस्मिक नहीं है, यह केवल संख्या 666 की एक संयोग घटना नहीं है, खासकर जब यह स्वाभाविक रूप से 665 के बाद और 667 से पहले आती है, बल्कि यह उन लोगों द्वारा जानबूझकर इस चिह्न को प्राप्त करना है जो वास्तव में इसके प्रति निष्ठा रखेंगे और यहाँ तक कि जानवर की भी पूजा करो।

तो प्रकाशितवाक्य 13 में 666 संख्या का महज एक संयोग नहीं है, यह पाठकों की ओर से इसे प्राप्त करने और इसे अपनाने और इसमें भाग लेने के लिए एक जानबूझकर किया गया कार्य है, चाहे वह कुछ भी हो। मुझे दो बातें कहने दीजिए. नंबर एक, सबसे अधिक संभावना है कि इसे

प्रतीकात्मक रूप से अध्याय 7 के समकक्ष के रूप में देखा जा सकता है, जहां संतों को उनकी पहचान का संकेत देने वाली एक मुहर या एक निशान भी प्राप्त होता है।

यहां मुहर या चिह्न, 666, का अर्थ पहले जानवर, रोमन साम्राज्य या सम्राट के अनुयायियों की वास्तविक पहचान को इंगित करना है। लेकिन दूसरा, सभी संभावनाओं में से, मुझे लगता है कि दो ऐसी हैं जो सम्मोहक हैं। नंबर एक यह है कि संख्या 666 संभवतः नीरो के नाम की कम से कम एक वर्तनी से मेल खाती है, जो अधिक प्रसिद्ध सीज़र में से एक है।

ऐसा प्रतीत होता है कि रहस्योद्घाटन नीरो के बहुत बाद लिखा गया था, इसलिए जॉन जो कर रहा है वह केवल नीरो का उपयोग कर रहा है, जो अपने कठोर व्यवहार और अपनी क्रूरता और अपनी दुष्टता के लिए जाना जाता था, जो कुछ भी हो रहा है उसके लिए नीरो को एक मॉडल या प्रतीक के रूप में उपयोग कर रहा है। पाठक का वर्तमान दिन. तो 666 उनका यह कहने का एक तरीका हो सकता है कि जो हो रहा है वह नीरो के साथ जो हुआ उसके समान है। एक बार फिर, उसी तरह से जैसे हम बुराई और अराजकता देखते हैं, हम भगवान के लोगों को नष्ट करने के प्रयास में बुराई देखते हैं, अब फिर से सम्राट और उस स्थिति में अवतार लेते हैं जिसका पाठकों ने सामना किया।

दूसरा, यह भी संभव है कि 666 पूर्ण संख्या 7 से कम हो। 666, या 666 दुष्ट त्रिमूर्ति, ड्रैगन, जानवर संख्या 1 और जानवर संख्या 2 के अनुरूप है, जो कि 7 की सही संख्या से कम है, शायद संगत ईश्वर और यीशु मसीह, उनके मसीहा और आत्मा की ईश्वरीय त्रिमूर्ति के साथ। लेकिन किसी भी मामले में, इस पाठ को फिर से एक साथ रखने के लिए, प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 और 13 पुस्तक में पहली शताब्दी में भगवान के लोगों के संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को और अधिक गहराई से, अधिक विस्तार से तलाशने और समझने के लिए कार्य करते हैं, लेकिन मैं किसी भी उम्र में बहस करूंगा. संघर्ष की वास्तविक प्रकृति केवल भौतिक नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक आध्यात्मिक लड़ाई, एक आध्यात्मिक संघर्ष, शैतान के प्रयास और इस चल रही लड़ाई को पुनर्जीवित करने की उसकी क्षमता, मानव व्यक्तियों और संस्थानों को खुद को स्थापित करने के

लिए प्रेरित करने की उसकी क्षमता है। भगवान, भगवान के रूप में अहंकारपूर्वक और उत्पीड़न और विरोध करने के लिए, यहां तक कि भगवान के लोगों को मार डालते हैं।

अध्याय 12 और 13 फिर भगवान के लोगों को संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को समझने और इसका उचित जवाब देने में सक्षम होने, अधर्मी दमनकारी शक्तियों का विरोध करने में सक्षम होने, लेकिन उत्पीड़न और यहां तक कि अंतिम कीमत पर भी टिके रहने में सक्षम होने में मदद करते हैं। शहादत या मौत का एक अर्थ में, प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 और 13 इफिसियों 6 में पॉल जो कहता है उसका एक प्रतीकात्मक वर्णन है। हमारी लड़ाई मांस और रक्त के साथ नहीं है, बल्कि स्वर्गीय क्षेत्रों में शासकों और अधिकारियों और शक्तियों के खिलाफ है। प्रकाशितवाक्य 12 और 13 अपने पाठकों को याद दिलाता है, आपकी सच्ची लड़ाई मांस और खून से नहीं है।

ऐसा नहीं है कि यह वास्तविक लड़ाई नहीं है, पॉल या जॉन ऐसा नहीं कह रहे हैं। यह वास्तविक है, लेकिन लड़ाई की असली प्रकृति सांसारिक क्षेत्र के शासकों और अधिकारियों, सम्राट या रोमन साम्राज्य के साथ एक हाड़-मांस की लड़ाई नहीं है, बल्कि आपकी सच्ची लड़ाई शासकों और अधिकारियों के साथ एक आध्यात्मिक लड़ाई है। स्वर्गीय दुनिया जो वास्तव में सर्वनाशकारी शैली में आपके सामने आने वाली सांसारिक लड़ाइयों के पीछे छिपी हुई है। इसलिए लड़ाई की वास्तविक प्रकृति को जानने के बाद, पाठक, पहली सदी के 12 और 13 के पाठक और किसी भी सदी के पाठक किसी भी समाज या सरकार या व्यक्ति को समझने और जवाब देने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं जो खुद को भगवान के रूप में महिमामंडित करते हैं और उसका विरोध करते हैं, लेकिन उत्पीड़न और उत्पीड़न के सामने भी दृढ़ रहना और सहन करना।

तो यह एक और उदाहरण है कि कैसे विभिन्न व्याख्यात्मक पद्धतियों का उपयोग हमें किसी पाठ को समझने, उसके मूल ऐतिहासिक संदर्भ के प्रकाश में उसके अर्थ को समझने में मदद कर सकता है, लेकिन हम उस पाठ को भगवान के रूप में अपने ऊपर कैसे लागू करते हैं, इसके लिए रास्ते भी अपनाना शुरू कर सकते हैं। वे लोग जो ईश्वर के वचन को प्रेरित धर्मग्रंथ के रूप में स्वीकार करते हैं और जिसके माध्यम से ईश्वर आज भी अपने लोगों से बात करते रहते हैं।